

“बिजनेस पोस्ट के अन्तर्गत डाक शुल्क के नगद भुगतान (बिना डाक टिकट) के प्रेषण हेतु अनुमत. क्रमांक जी.2-22-छत्तीसगढ़ गजट / 38 सि. से. भिलाई. दिनांक 30-05-2001.”



पंजीयन क्रमांक
“छत्तीसगढ़/दुर्ग/09/2013-2015.”

छत्तीसगढ़ राजपत्र

(असाधारण)
प्राधिकार से प्रकाशित

क्रमांक 202]

रायपुर, गुरुवार, दिनांक 4 मई 2023 — वैशाख 14, शक 1945

विधि और विधायी कार्य विभाग
मंत्रालय, महानदी भवन, नवा रायपुर अटल नगर

अटल नगर, दिनांक 4 मई 2023

क्र. 5742/डी. 55/21-अ/प्रारू./छ.ग./23. — छत्तीसगढ़ विधान सभा का निम्नलिखित अधिनियम, जिस पर दिनांक 27-04-2023 को राज्यपाल महोदय की अनुमति प्राप्त हो चुकी है, एतद्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है।

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के नाम से तथा आदेशानुसार,
मोहन प्रसाद गुप्ता, अतिरिक्त सचिव.

छत्तीसगढ़ अधिनियम (क्रमांक 11 सन् 2023) छत्तीसगढ़ माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023.

छत्तीसगढ़ माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 (क्र. 7 सन् 2017) को और संशोधित करने हेतु अधिनियम।

भारत गणराज्य के चौहत्तरवें वर्ष में छत्तीसगढ़ विधान मण्डल द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो:-

- | | |
|----------------------------|--|
| संक्षिप्त नाम तथा प्रारंभ. | 1. (1) यह अधिनियम छत्तीसगढ़ माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 कहलायेगा। |
| | (2) यह ऐसी तारीख को प्रवृत्त होगा, जो राज्य सरकार राजपत्र में, अधिसूचना द्वारा नियत करे: |

परंतु इस अधिनियम के विभिन्न उपबंधों के लिए विभिन्न तारीखें नियत की जा सकेंगी और ऐसे उपबंध में इस अधिनियम के प्रारंभ के प्रति किसी निर्देश का अर्थ लगाया जायेगा कि वह इस उपबंध के प्रवृत्त होने के प्रति निर्देश है।

- | | |
|--------------------|---|
| धारा 16 का संशोधन. | 2. छत्तीसगढ़ माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 (क्र. 7 सन् 2017), (जो इसमें इसके पश्चात् मूल अधिनियम के रूप में निर्दिष्ट है) की धारा 16 में,- |
|--------------------|---|

(क) उपधारा (2) में,-

(एक) खंड (ख) के पश्चात्, निम्नलिखित खंड अंतःस्थापित किया जाये, अर्थात् :-

“(खक) धारा 38 के अधीन ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को संसूचित उक्त आपूर्ति के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय के ब्योरे निर्बंधित नहीं किए गए हो ;”

(दो) खंड (ग) में, शब्द तथा अंक “या धारा 43क” का लोप किया जाये।

(ख) उपधारा (4) में, शब्द तथा अंक “सितंबर मास के लिए धारा 39 के अधीन विवरणी के दिए जाने की देय तारीख” के स्थान पर, शब्द, “तीस नवंबर” प्रतिस्थापित किया जाये।

3. मूल अधिनियम की धारा 29 की उपधारा (2) में,—

धारा 29 का संशोधन.

(क) खंड (ख) में, शब्द “तीन क्रमवर्ती कर अवधियों तक विवरणी” के स्थान पर, शब्द “उक्त विवरणी प्रस्तुत करने के लिए नियत तारीख से तीन मास से परे किसी वित्तीय वर्ष के लिए विवरणी” प्रतिस्थापित किया जाये;

(ख) खंड (ग) में, शब्द “लगातार छः मास की अवधि तक” के स्थान पर, शब्द “ऐसी लगातार कर अवधि तक, जो विहित की जाएं,” प्रतिस्थापित किया जाये।

4. मूल अधिनियम की धारा 34 की उपधारा (2) में, शब्द “सितंबर मास” के स्थान पर, शब्द “तीस नवंबर” प्रतिस्थापित किया जाये।

धारा 34 का संशोधन.

5. मूल अधिनियम की धारा 37 में,—

धारा 37 का संशोधन.

(क) उपधारा (1) में,—

(एक) शब्द “इलेक्ट्रॉनिक रूप में” के स्थान पर, शब्द “ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अध्यधीन रहते हुए इलेक्ट्रॉनिक रूप में और” प्रतिस्थापित किया जाये;

(दो) शब्द “उक्त प्रदायों के प्राप्तिकर्ता को ऐसी समयावधि के भीतर और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, संसूचित किए जाएंगे:” के स्थान पर, शब्द “ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अध्यधीन रहते हुए उक्त पूर्तियों के प्राप्तिकर्ता को ऐसे समय के भीतर और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, संसूचित किए जाएंगे” प्रतिस्थापित किया जाये;

(तीन) प्रथम परंतुक का लोप किया जाए;

(चार) द्वितीय परंतुक में, शब्द “परंतु यह और कि” के स्थान पर, शब्द “परंतु” प्रतिस्थापित किया जाये;

(पाच) तृतीय परंतुक में, शब्द “परंतु यह भी कि” के स्थान पर, शब्द “परंतु यह और कि” प्रतिस्थापित किया जाये;

(ख) उपधारा (2) का लोप किया जाये;

(ग) उपधारा (3) में,—

(एक) शब्द तथा अंक “जो धारा 42 या धारा 43 के अधीन बे-मिलान रह गए हैं,” का लोप किया जाये;

(दो) पहले परंतुक में, शब्द “सितंबर मास” के स्थान पर, शब्द “तीस नवंबर” प्रतिस्थापित किया जाये;

(घ) उपधारा (3) के पश्चात्, निम्नलिखित उपधारा जोड़ी जाये, अर्थात् :—

“(4) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को उपधारा (1) के अधीन जावक पूर्तियों के ब्यौरे किसी कर अवधि के लिए प्रस्तुत करना अनुज्ञात नहीं किया जायेगा, यदि उसके द्वारा किन्हीं पूर्ववर्ती कर अवधियों के लिए जावक पूर्तियों के ब्यौरे प्रस्तुत नहीं किए गए हैं:

परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए, जो उसमें विनिर्दिष्ट किए जाएं, किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या व्यक्तियों के किसी वर्ग को उपधारा (1) के अधीन जावक पूर्तियों के ब्यौरे प्रस्तुत करना तब भी अनुज्ञात कर सकेगी, जब उसने एक या अधिक पूर्ववर्ती कर अवधियों के लिए जावक पूर्तियों के ब्यौरे प्रस्तुत नहीं किए हैं।”

धारा 38 का संशोधन. 6.

मूल अधिनियम की धारा 38 के स्थान पर, निम्नलिखित धारा प्रतिस्थापित की जाये, अर्थात् :—

“38. आवक पूर्तियों और इनपुट कर प्रत्यय के ब्यौरों की संसूचना.— (1) धारा 37 की उपधारा (1) के

अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत जावक पूर्तियों तथा ऐसी अन्य पूर्तियों, जो विहित किए जाएं, के ब्यौरे तथा इनपुट कर प्रत्यय के ब्यौरे अंतर्विष्ट करने वाला स्वतः जनित विवरण, ऐसे प्ररूप और रीति में, ऐसे समय के भीतर और ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाएं, ऐसी पूर्तियों के प्राप्तकर्ताओं को इलेक्ट्रॉनिक रूप से उपलब्ध करवाएं जायेंगे।

(2) उपधारा (1) के अधीन स्वतः जनित विवरण में सम्मिलित होंगे:—

(क) आवक पूर्तियों के ब्यौरे, जिनके संबंध में इनपुट कर का प्रत्यय प्राप्तकर्ता को उपलब्ध हो सके; तथा

(ख) पूर्तियों के ब्यौरे, जिनके संबंध में ऐसे प्रत्यय का लाभ, प्राप्तकर्ता द्वारा धारा 37 की उपधारा (1) के अधीन उक्त पूर्तियों के ब्यौरे प्रस्तुत किए जाने के कारण, चाहे पूर्ण रूप से या भाग रूप से, निम्नलिखित द्वारा नहीं उठाया जा सकता,—

(एक) रजिस्ट्रीकरण लेने की ऐसी अवधि के भीतर, जो विहित की जाए, किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा ; या

(दो) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा, जिसने कर के संदाय में व्यतिक्रम किया है और जहां ऐसा व्यतिक्रम ऐसी अवधि के लिए, जो विहित की जाये, निरंतर रहा है; या

(तीन) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा, जिसके द्वारा संदेय आउटपुट कर ऐसी अवधि के दौरान, जो विहित की जाए, उक्त उपधारा के अधीन उसके द्वारा प्रस्तुत जावक पूर्तियों के विवरण के अनुसार, ऐसी सीमा द्वारा, जो विहित की जाए, उक्त अवधि के

दौरान उसके द्वारा सदत्त आउटपुट कर से अधिक है; या

(चार) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा, जिसने ऐसी अवधि के दौरान, जो विहित की जाए, उस रकम के इनपुट कर के प्रत्यय का लाभ लिया है, जो उस प्रत्यय से, खंड (क) के अनुसार ऐसी सीमा तक अधिक है, जो विहित की जाए ; या

(पांच) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा, जिसने ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए, जो विहित किए जाएं, धारा 49 की उपधारा (12) के उपबंधों के अनुसार अपने कर दायित्व के निर्वहन में व्यतिक्रम किया है ; या

(छः) ऐसे व्यक्तियों के अन्य वर्ग द्वारा, जो विहित किए जाएं।”

धारा 39 का संशोधन.

7.

मूल अधिनियम की धारा 39 में,—

(क) उपधारा (5) में, शब्द “बीस” के स्थान पर, शब्द “तेरह” प्रतिस्थापित किया जाये;

(ख) उपधारा (7) में, प्रथम परंतुक के स्थान पर, निम्नलिखित परंतुक प्रतिस्थापित किया जाये, अर्थात्:—

“परंतु प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो उपधारा (1) के परंतुक के अधीन विवरणी प्रस्तुत कर रहा है, सरकार को ऐसे प्ररूप और रीति में तथा ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए,—

(क) माल या सेवाओं या दोनों की आवक और जावक पूर्तियों को गणना में लेते हुए लाभ लिए गए इनपुट कर प्रत्यय, संदेय कर और मास के दौरान ऐसी अन्य विशिष्टियों के समतुल्य कर की रकम; या

(ख) खंड (क) में निर्दिष्ट रकम के स्थान पर ऐसी रीति में और ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के

अध्यधीन रहते हुए, जो विहित किए जाएं,
अवधारित रकम,

का संदाय करेगा।”

(ग) उपधारा (9) में,—

(एक) शब्द तथा अंक “धारा 34 और धारा 38 के
उपबंधों के अध्यधीन यदि” के स्थान पर, शब्द
“जहाँ” प्रतिस्थापित किया जाये;

(दो) परंतुक में, शब्द “सितंबर मास के लिए या
वित्तीय वर्ष की समाप्ति के पश्चात् दूसरी
तिमाही के लिए” के स्थान पर, शब्द “तीस
नवंबर” प्रतिस्थापित किया जाये;

(घ) उपधारा (10) में, शब्द “विवरणी नहीं दी गई है।”
के स्थान पर, निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया
जाये, अर्थात् :-

“या उक्त कर अवधि के लिए धारा 37 की
उपधारा (1) के अधीन जावक पूर्ति के ब्यौरे उसके
द्वारा प्रस्तुत नहीं किए गए हैं :

परंतु सरकार, परिषद् की अनुशंसा पर,
अधिसूचना द्वारा, ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के
अध्यधीन रहते हुए, जो उसमें विनिर्दिष्ट की जाये,
किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों
के किसी वर्ग को विवरणी प्रस्तुत करने के लिए
अनुज्ञात कर सकेगी, यद्यपि उसने एक या अधिक
पूर्व कर अवधियों के लिए विवरणियां प्रस्तुत नहीं
की हों या उक्त कर अवधि के लिए धारा 37 की
उपधारा (1) के अधीन जावक पूर्ति के ब्यौरे प्रस्तुत
नहीं किए हों।”

8. मूल अधिनियम की धारा 41 के स्थान पर, निम्नलिखित धारा धारा 41 का संशोधन.
प्रतिस्थापित की जाये, अर्थात् :-

“41. इनपुट कर प्रत्यय का उपभोग.—(1) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत
व्यक्ति, ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अध्यधीन रहते हुए, जो
विहित की जाएं, अपनी विवरणी में स्व-निर्धारिती के रूप में
पात्र इनपुट कर के प्रत्यय का उपभोग करने का हकदार
होगा और ऐसी रकम उसके इलैक्ट्रॉनिक जमा खाते में जमा
की जाएगी।

(2) माल या सेवाओं या दोनों की ऐसी पूर्ति के संबंध में उपधारा (1) के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा उपभोग किया गया इनपुट कर प्रत्यय, उस पर संदेय कर, पूर्तिकर्ता द्वारा संदत्त नहीं किया गया है, वह उक्त व्यक्ति द्वारा ऐसी रीति में, जो विहित की जाये, लागू ब्याज के साथ उत्क्रमित किया जायेगा :

परंतु जहाँ उक्त पूर्तिकर्ता, पूर्वोक्त पूर्ति के संबंध में संदेय कर का भुगतान करता है, उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति उसके द्वारा उत्क्रमित जमा की रकम ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, पुनः प्राप्त कर सकेगा ।”

धारा 42, 43 और
43क का लोप.

9. मूल अधिनियम की धारा 42, 43 और 43क का लोप किया जाये।

धारा 47 का संशोधन.

10. मूल अधिनियम की धारा 47 की उपधारा (1) में,—

(क) शब्द “या अंतर्गामी” का लोप किया जाये;

(ख) शब्द तथा अंक “या धारा 38” का लोप किया जाये;
तथा

(ग) शब्द तथा अंक “धारा 39 या धारा 45” के पश्चात्, शब्द तथा अंक “या धारा 52” अंतःस्थापित किया जाये।

धारा 48 का संशोधन.

11. मूल अधिनियम की धारा 48 की उपधारा (2) में, शब्द तथा अंक “धारा 38 के अधीन अंतर्गामी प्रदायों के ब्यौरे” का लोप किया जाये।

धारा 49 का संशोधन.

12. मूल अधिनियम की धारा 49 में,—

(क) उपधारा (2) में, शब्द तथा अंक “या धारा 43क” का लोप किया जाये;

(ख) उपधारा (4) में, शब्द “ऐसी शर्तों” के पश्चात्, शब्द “और निर्बंधनों” अंतःस्थापित किया जाये;

(ग) उपधारा (11) के पश्चात्, निम्नलिखित उपधारा अंतःस्थापित की जाये, अर्थात् :—

“(12) इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, सरकार, परिषद् की अनुशंसा पर, इस अधिनियम के अधीन या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 के अधीन, जावक कर दायित्व के ऐसे अधिकतम भाग को विनिर्दिष्ट

कर सकेंगी, जिसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के किसी वर्ग द्वारा, ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए, इलेक्ट्रॉनिक जमा खाते के माध्यम से चुकाया जा सकेगा।”

13. मूल अधिनियम की धारा 50 की उपधारा (3) के स्थान पर, धारा 50 का संशोधन.
निम्नलिखित उपधारा प्रतिस्थापित की जाये और जो भूतलक्षी प्रभाव से 1 जुलाई, 2017 से प्रतिस्थापित समझी जायेगी, अर्थात्:—
- “(3) जहाँ इनपुट कर प्रत्यय का गलत उपभोग और उपयोग किया गया है, रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, ऐसे गलत उपभोग और उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय पर, शासन द्वारा, परिषद् की अनुशंसाओं पर अधिसूचित की जाने वाली चौबीस प्रतिशत से अनधिक दर पर ब्याज का संदाय करेगा और ब्याज की गणना ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, की जाएगी।”
14. मूल अधिनियम की धारा 52 की उपधारा (6) के परंतुक में, शब्द “सितंबर मास का विवरण प्रस्तुत करने के लिए सम्यक् तारीख” के स्थान पर, शब्द “तीस नवंबर” प्रतिस्थापित किया जाये। धारा 52 का संशोधन.
15. मूल अधिनियम की धारा 54 में,— धारा 54 का संशोधन.
- (क) उपधारा (1) के परंतुक में, शब्द तथा अंक “धारा 39 के अधीन प्रस्तुत विवरणी में ऐसे प्रतिदाय का ऐसी रीति” के स्थान पर, शब्द “ऐसे प्रतिदाय का ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति” प्रतिस्थापित किया जाये;
- (ख) उपधारा (2) में, शब्द “छः मास” के स्थान पर, शब्द “दो वर्ष” प्रतिस्थापित किया जाये;
- (ग) उपधारा (10) में, शब्द, अंक तथा चिन्ह “उपधारा (3) के अधीन” का लोप किया जाये;
- (घ) उपधारा (14) के स्पष्टीकरण के सरल क्रमांक (2) की प्रविष्टि (ख) के पश्चात्, निम्नलिखित प्रविष्टि अंतःस्थापित की जाये, अर्थात्:—
- “(खक) विशेष आर्थिक जोन विकासकर्ता या विशेष आर्थिक जोन इकाई को शून्य दर पर माल या सेवाओं अथवा दोनों की पूर्ति की दशा में, जहाँ, यथास्थिति, उन्हें ऐसी पूर्ति

या ऐसी पूर्ति में प्रयुक्त इनपुट या इनपुट सेवाओं के संबंध में संदत्त कर का प्रतिदाय उपलब्ध है, ऐसी पूर्तियों के संबंध में धारा 39 के अधीन विवरणी प्रस्तुत करने के लिए नियत तारीख;”

अटल नगर, दिनांक 4 मई 2023

क्र. 5742/डी. 55/21-अ/प्रारू./छ.ग./23. — भारत के संविधान के अनुच्छेद 348 के खण्ड (3) के अनुसरण में इस विभाग का समसंख्यक अधिनियम दिनांक 04-05-2023 का अंग्रेजी अनुवाद राज्यपाल के प्राधिकार से एतद्द्वारा प्रकाशित किया जाता है।

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के नाम से तथा आदेशानुसार,
मोहन प्रसाद गुप्ता, अतिरिक्त सचिव.

CHHATTISGARH ACT
(No. 11 of 2023)
THE CHHATTISGARH GOODS AND SERVICES TAX
(AMENDMENT) ACT, 2023.

An Act further to amend the Chhattisgarh Goods and Services Tax Act, 2017 (No. 7 of 2017).

Be it enacted by the Chhattisgarh Legislature in the Seventy-Fourth Year of the Republic of India, as follows:-

1. (1) This Act may be called the Chhattisgarh Goods and Services Tax (Amendment) Act, 2023. **Short title and commencement.**

- (2) It shall come into force on such date as the State Government may, by Notification in the Official Gazette, appoint:

Provided that different dates may be appointed for different provisions of this Act and any reference in any such provision to the commencement of this Act shall be construed as a reference to the coming into force of that provision.

2. In the Chhattisgarh Goods and Services Tax Act, 2017 (No. 7 of 2017), (hereinafter referred to as the Principal Act), in Section 16,— **Amendment of Section 16.**

(a) in sub-section (2),—

(i) after clause (b), the following clause shall be inserted, namely:—

“(ba) the details of input tax credit in respect of the said supply communicated to such registered person under Section 38 has not been restricted;”

(ii) in clause (c), the words and figure “or Section 43A” shall be omitted.

(b) in sub-section (4), for the words and figures “due date of furnishing of the return under Section 39 for the month of September”, the words “thirtieth day of November” shall be substituted.

**Amendment of
Section 29.**

3. In sub-section (2) of Section 29 of the Principal Act, —

(a) in clause (b), for the words “returns for three consecutive tax periods”, the words “the return for a financial year beyond three months from the due date of furnishing

the said return” shall be substituted;

(b) in clause (c), for the words “a continuous period of six months”, the words “such continuous tax period as may be prescribed” shall be substituted.

4. In sub-section (2) of Section 34 of the Principal Act, for the word “September”, the words “the thirtieth day of November” shall be substituted.

**Amendment of
Section 34.**

5. In Section 37 of the Principal Act,—

**Amendment of
Section 37.**

(a) in sub-section (1), —

(i) for the words “shall furnish, electronically,”, the words “shall furnish, electronically, subject to such conditions and restrictions and” shall be inserted;

(ii) for the words “shall be communicated to the recipient of the said supplies within such time and in such manner as may be prescribed”, the words “shall, subject to such conditions and

restrictions, within such time and in such manner as may be prescribed, be communicated to the recipient of the said supplies” shall be substituted;

(iii) the first proviso shall be omitted;

(iv) in the second proviso, for the words “Provided further that”, the words “Provided that” shall be substituted;

(v) in the third proviso, for the words “Provided also that”, the words “Provided further that” shall be substituted;

(b) sub-section (2) shall be omitted;

(c) in sub-section (3),—

(i) the words and figures “and which have remained unmatched under Section 42 or Section 43” shall be omitted;

(ii) in the first proviso, for the words and figure “the month of September”, the words

“the thirtieth day of November” shall be substituted;

(d) after sub-section (3), the following sub-section shall be added, namely:—

“(4) A registered person shall not be allowed to furnish the details of outward supplies under sub-section (1) for a tax period, if the details of outward supplies for any of the previous tax periods has not been furnished by him:

Provided that the Government may, on the recommendations of the Council, by notification, subject to such conditions and restrictions as may be specified therein, allow a registered person or a class of registered persons to furnish the details of outward supplies under sub-section (1), even if he has not furnished the details of outward

supplies for one or more previous tax periods.”

**Amendment of
Section 38.**

6. For Section 38 of the Principal Act, the following Section shall be substituted, namely:—

**“38.Communication of details
of inward supplies and
input tax credit.-**

(1) The details of outward supplies furnished by the registered persons under sub-section (1) of Section 37 and of such other supplies as may be prescribed, and an auto-generated statement containing the details of input tax credit shall be made available electronically to the recipients of such supplies in such form and manner, within such time, and subject to such conditions and restrictions, as may be prescribed.

(2) The auto-generated statement under sub-section (1) shall consist of—

- (a) details of inward supplies in respect of which credit of input

tax may be available to the recipient; and

(b) details of supplies in respect of which such credit cannot be availed, whether wholly or partly, by the recipient, on account of the details of the said supplies being furnished under sub-section (1) of Section 37,—

(i) by any registered person within such period of taking registration as may be prescribed; or

(ii) by any registered person, who has defaulted in payment of tax and where such default has continued for such period as may be prescribed; or

(iii) by any registered person, the output tax payable by whom in accordance with the statement of

outward supplies furnished by him under the said sub-section during such period, as may be prescribed, exceeds the output tax paid by him during the said period by such limit as may be prescribed; or

(iv) by any registered person who, during such period as may be prescribed, has availed credit of input tax of an amount that exceeds the credit that can be availed by him in accordance with clause (a), by such limit as may be prescribed; or

(v) by any registered person, who has defaulted in discharging his tax liability in accordance with the provisions of sub-section (12) of Section 49 subject

to such conditions
and restrictions as
may be prescribed;
or

(vi) by such other class
of persons as may
be prescribed.”

7. In Section 39 of the Principal
Act,—

**Amendment of
Section 39.**

(a) in sub-section (5), for the
word “twenty”, the word
“thirteen” shall be
substituted;

(b) in sub-section (7), for the
first proviso, the following
proviso shall be
substituted, namely: —

“Provided that every
registered person
furnishing return under
the proviso to sub-section
(1) shall pay to the
Government, in such form
and manner, and within
such time, as may be
prescribed,—

(a) an amount equal to
the tax due taking
into account inward
and outward supplies
of goods or services or
both, input tax credit
availed, tax payable
and such other

particulars during a month; or

(b) in lieu of the amount referred to in clause (a), an amount determined in such manner and subject to such conditions and restrictions as may be prescribed.”

(c) in sub-section (9),—

(i) for the words and figures “Subject to the provisions of Sections 37 and 38, if”, the word “Where” shall be substituted;

(ii) in the proviso, for the words “the due date for furnishing of return for the month . of September or second quarter”, the words “the thirtieth day of November” shall be substituted;

(d) in sub-section (10), for the words “has not been furnished by him”, the following shall be substituted, namely:—

“or the details of outward supplies under sub-section (1) of Section 37 for the said tax period has not been furnished by him:

Provided that the Government may, on the recommendations of the Council, by notification, subject to such conditions and restrictions as may be specified therein, allow a registered person or a class of registered persons to furnish the return, even if he has not furnished the returns for one or more previous tax periods or has not furnished the details of outward supplies under sub-section (1) of Section 37 for the said tax period.”

8. For Section 41 of the Principal Act, the following Section shall be substituted, namely:—

**Amendment of
Section 41.**

“41. Availment of input tax credit.-(1)Every registered person shall, subject to such conditions and restrictions as may be

prescribed, be entitled to avail the credit of eligible input tax, as self-assessed, in his return and such amount shall be credited to his electronic credit ledger.

- (2) The credit of input tax availed by a registered person under sub-section (1) in respect of such supplies of goods or services or both, the tax payable whereon has not been paid by the supplier, shall be reversed along with applicable interest, by the said person in such manner as may be prescribed:

Provided that where the said supplier makes payment of the tax payable in respect of the aforesaid supplies, the said registered person may re-avail the amount of credit reversed by him in such manner as may be prescribed.”

**Omission of
Section 42, 43
and 43A.**

9. Section 42, 43 and 43A of the Principal Act shall be omitted.

10. In sub-section (1) of Section 47 of the Principal Act,—
- Amendment of Section 47.**
- (a) the words “or inward” shall be omitted;
 - (b) the words and figures “or Section 38” shall be omitted; and
 - (c) after the words and figures “Section 39 or Section 45”, the words and figures “or Section 52” shall be inserted.
11. In sub-section (2) of Section 48 of the Principal Act, the words, and figure “the details of inward supplies under Section 38” shall be omitted.
- Amendment of Section 48.**
12. In Section 49 of the Principal Act,—
- Amendment of Section 49.**
- (a) in sub-section (2), the words and figure “or Section 43A” shall be omitted;
 - (b) in sub-section (4), after the words “subject to such conditions”, the word “and restrictions” shall be inserted;
 - (c) after sub-section (11), the following sub-section shall be inserted, namely:—

“(12) Notwithstanding anything contained in this Act, the Government may, on the recommendations of the Council, subject to such conditions and restrictions, specify such maximum proportion of output tax liability under this Act or under the Integrated Goods and Services Tax Act, 2017 which may be discharged through the electronic credit ledger by a registered person or a class of registered persons, as may be prescribed.”

**Amendment of
Section 50.**

13. For sub-section (3) of Section 50 of the Principal Act, the following sub-section shall be substituted and shall be deemed to have been substituted with effect from the 1st day of July, 2017, retrospectively, namely:—

“(3) Where the input tax credit has been wrongly availed and utilised, the registered person shall pay interest on such input tax credit wrongly availed and utilised, at such rate not exceeding twenty-four per cent, as

may be notified by the Government, on the recommendations of the Council, and the interest shall be calculated, in such manner as may be prescribed.”

14. In proviso of sub-section (6) of Section 52 of the Principal Act, for the words “due date for furnishing of statement for the month of September”, the words “thirtieth day of November” shall be substituted.

**Amendment of
Section 52.**

15. In Section 54 of the Principal Act, —

**Amendment of
Section 54.**

- (a) in proviso of sub-section (1), for the words and figures “such refund in the return furnished under Section 39 in such manner”, the words “such refund in such form and such manner” shall be substituted;
- (b) in sub-section (2), for the words “six months”, the words “two years” shall be substituted;
- (c) in sub-section (10), the words, symbols and figure “under sub-section (3)” shall be omitted;
- (d) after entry (b) of serial

number (2) of Explanation of sub-section (14), the following entry shall be inserted, namely:—

“(ba) in case of zero-rated supply of goods or services or both to a Special Economic Zone developer or a Special Economic Zone unit where a refund of tax paid is available in respect of such supplies themselves, or as the case may be, the inputs or input services used in such supplies, the due date for furnishing of return under Section 39 in respect of such supplies;”